सम्पादकीय

भारत के जननायक कौन हैं ?

औरंगजेब के खिलाफ भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों ने निरंतर युद्ध लड़ा। उत्तर में दशम गुरु श्री गोविंद सिंह जी से वह युद्धरत था। बाबर ने भारत में जिस विदेशी राजवंश की स्थापना की थी उसकी चूलें हिलने की नौबत आ गई थीं । औरंगजेब ने उत्तर भारत की दस गुरु परंपरा के नौंवे गुरु श्री तेग बहादुर जी को दिल्ली के चांदनीचौक में शहीद करवा दिया था। विदेशी शासकों का अधर्म राज्य भारत में स्थापित हो चुका था, उसके खिलाफ भारत के लोग धर्म युद्ध लड रहे थे। श्री तेग बहादुर इसी धर्म युद्ध में लडते हुए शहीद हुए थे। इसीलिए उन्हें हिंद की चादर कहा जाता है। इस धर्म युद्ध के कारण विदेशी शासकों की नींव हिल गई। दक्षिण में शिवाजी मराठा उन्हें घेर रहे थे। आज जब हम इतिहास की विवेचना करते हैं तो मुख्य प्रश्न उठता है कि ऐतिहासिक सृष्टि से इस धर्म युद्ध के कौन से पात्र हमारे राष्ट्र नायक हैं और कौन से खलनायक हैं?

यह प्रश्न हरियाणा के श्री दर्शनलाल जैन ने बहुत शिद्दत से उठाया है । उऩ्होंने एक पत्र में इस प्रश्न को रेखांकित किया। बाबर द्वारा स्थापित राजवंश से पहले हिन्दुस्थान पर अफगानिस्तान का एक अन्य राजवंश जिसकी स्थापना एक आक्रांत के जननायक कौन हैं ? क्रमणकारी बहलोल लोदी ने की थी, राज्य कर रहा था। उस राजवंश के शासक इब्राहिम लोधी को बाबर ने हरियाणा के पानीपत के स्थान पर मार कर अपने मुगल राजवंश की स्थापना की थी। पानीपत में उस इब्राहिम लोधी की कब्र को राष्ट्रीय गरिमा प्रदान करने के लिए हरियाणा सरकार ने 25 लाख रुपये का प्रावधान किया है। इसके विपरीत हरियाणा के ही एक और स्वतंत्रता सेनानी हेमचन्द्र जो विदेशी मुगल शासकों के खिलाफ लडता रहा, गाजी कहलाने के चक्कर में अकबर ने अपने हाथ से जिसकी गर्दन काट दी, जिसको भारतीय जनता ने दिल्ली के पांडवों के किले में विक्रमादित्य कह कर सम्मानित किया, की समाधि स्थल पर मस्जिद का निर्माण कर दिया गया है। श्री दर्शनलाल जैन जी हरियाणा के जाने माने चिंतक और समाजसेवी हैं। वे संवेदनशील प्राणी हैं ,इसलिए ऐसे मुद्दों पर उद्वेलित हो जाते हैं । अन्यथा हमारे राजनीतिज्ञों की चमडी इतनी मोटी हो गई है कि संवेदना और राष्ट्रीय गौरव उन्हें छू तक नहीं गया। विदेशी आक्रान्ता बाबर ने जब भारत पर आक्रमण किया था तब गुरु नानक देव जी को भी कहना पडा था – **खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ**। काबुल में उसी विदेशी आक्रांता बाबर की कब्र पर जाकर भारत के प्रधानमंत्री डा मनममोहन सिंह आठ–आठ आंसू बहा आए़ ।

जिस औरंगजेब ने हजारों मंदिरों को ध्वस्त किया, गुरु के सिंहों के सिर की कीमत लगा दी, गुरु तेग बहादुर जी को शहीद किया,जिसको जफरनामा लिख कर गुरु गोविंद सिंह जी ने लताड लगाई, भारत सरकार ने उसी औरंगजेब के नाम पर दिल्ली में एक प्रसिद्ध मार्ग की स्थापना कर के मानो औरंगजेब को श्रद्धांजलि अर्पित की हो। प्रश्न यह है कि भारत के जननायक कौन हैं?

गुरु तेग बहादुर और गुरु गोविंद सिंह हैं या फिर औरंगजेब और बाबर हैं ? हेमचन्द्र और महाराणा प्रताप हैं या फिर इब्राहिम लोधी और अकबर है ? सरकार के आचरण से लगता है कि वह वोटों के लालच में औरंगजेब और इब्राहिम लोधी को जननाय़क बनाने पर आमादा है। भारतीय जनता को इसका उत्तर देना होगा़ ।

– डा कुलदीप चन्द अग्निहोत्री